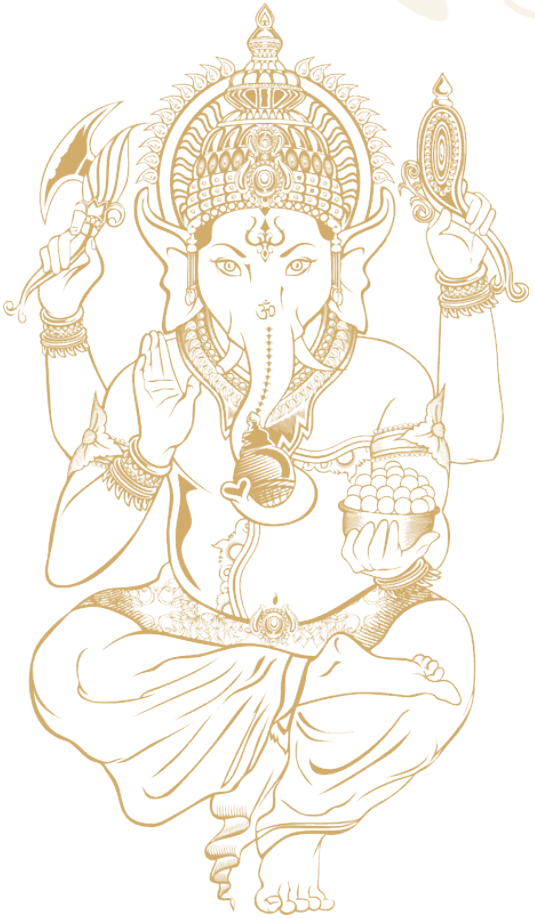

Rajeev Singh

09 Dec 1993

03:07 PM

Bijnor

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121544401**

तिथि 09/12/1993 **समय** 15:07:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Bijnor **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:46:35
अक्षांश 29:22:00 उत्तर **रेखांश** 78:09:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:17:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	20:02:09 घं
वेलान्तर	00:07:41 घं
सूर्योदय	07:00:20 घं
सूर्यास्त	17:19:09 घं
चैत्रादि संवत	2050
शक संवत	1915
मास	मार्गशीर्ष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	चित्रा
योग	शोभन
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पो-पौरुष
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

मंगल 3वर्ष 6मा 17दि

गुरु

27/06/2015
27/06/2031

गुरु	15/08/2017
शनि	26/02/2020
बुध	03/06/2022
केतु	10/05/2023
शुक्र	08/01/2026
सूर्य	27/10/2026
चन्द्र	26/02/2028
मंगल	01/02/2029
राहु	27/06/2031

योगिनी

मंगला 0वर्ष 6मा 2दि

संकटा

12/06/2021
12/06/2029

संकटा	23/03/2023
मंगला	12/06/2023
पिंगला	22/11/2023
धान्या	22/07/2024
भ्रामरी	12/06/2025
भद्रिका	23/07/2026
उल्का	22/11/2027
सिद्धा	12/06/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			18:07:30	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	---	0:00			
सूर्य			23:33:14	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	मंगल	मित्र राशि	1.16	भ्रातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			29:54:35	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	मित्र राशि	1.19	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	28:16:12	वृश्चि	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	स्वराशि	1.29	अमात्य	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			09:46:12	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	सम राशि	0.86	ज्ञाति	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			12:05:33	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	शत्रु राशि	1.10	पुत्र	धन	सम्पत
शुक्र			14:16:43	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	सम राशि	0.73	मातृ	कलत्र	क्षेम
शनि			01:21:13	कुंभ	धनिष्ठा	3	मंगल	बुध	मूलत्रिकोण	1.72	कलत्र	आयु	जन्म
राहु			09:13:46	वृश्चि	अनुराधा	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			09:13:46	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	सम राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

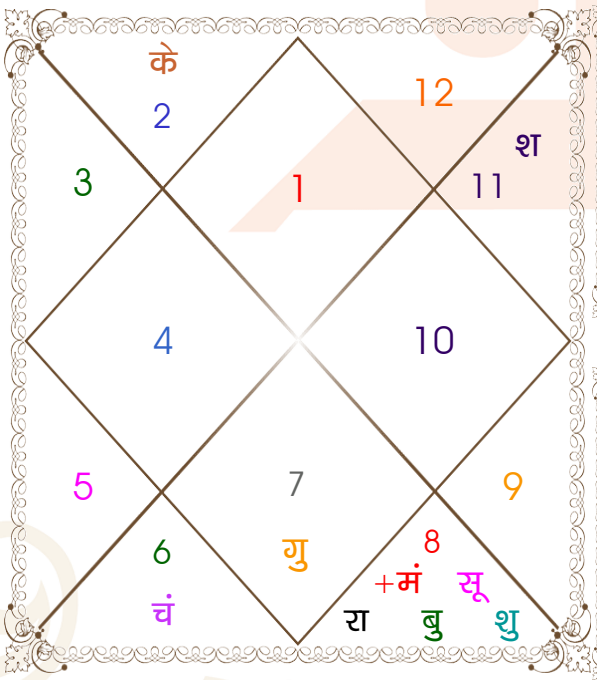

चन्द्र कुंडली

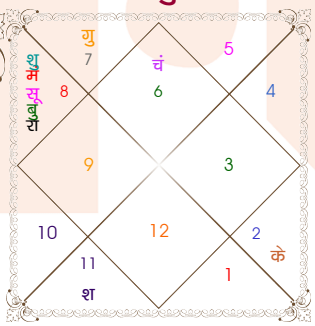

नवमांश कुंडली

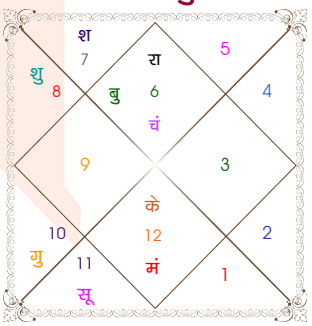

सर्वाष्टकवर्ग

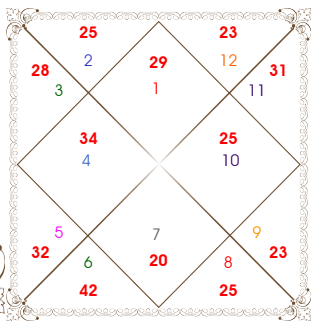

दशमांश कुंडली

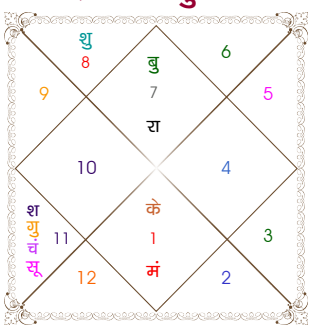

नक्षत्रफल

आप चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में उत्पन्न हुए है। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग मूषक, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र, वर्ण वैश्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भिक अक्षर "पो" से आरम्भ होगा।

ब्राहमण तथा देवताओं के आप प्रिय भक्त होंगे तथा समय समय पर इनके प्रति अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन करते हुए नियमपूर्वक पूजार्चन करके इन्हें प्रसन्न रखेंगे। आपका स्वभाव सन्तोष के भाव से युक्त रहेगा तथा अल्प प्राप्ति में भी सपरिवार आप सन्तुष्टि का अनुभव करेंगे। आप धनधान्यादि से हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। इनकी आपके जीवन में कभी भी न्यूनता नहीं रहेगी तथा इनसे युक्त रहकर सुखपूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

नवीन वस्त्रों के प्रति आप में आकर्षण की प्रबलता रहेगी तथा समय समय पर इनको धारण करेंगे साथ ही गले में हार पहनने का भी आप को शौक रहेगा तथा इस शौक की भी आप पूर्ति करेंगे। आपके नेत्रों तथा शरीर की सुन्दरता अत्यन्त ही चित्तार्कषक एवं दर्शनीय रहेगी जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने मन के भेंदो को हमेशा अपने तक ही सीमित रखेंगे तथा इसके बारे में किसी अन्य व्यक्ति या मित्रादि को कुछ नहीं बताऐंगे तथा अपने इस स्वभाव का आप जीवन भर पालन करने में तत्पर रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में

अनुरक्त रहता है।

आप अत्यन्त ही पराक्रमी एवं प्रतापी पुरूष होंगे। शत्रु को पराजित करने या कुचलने में आप हमेशा सफलता को प्राप्त करेंगे। कोई भी शत्रु आपका विरोध करने का साहस नहीं करेगा। नीति शास्त्र में आप पूर्ण रूप से पारंगत रहेंगे तथा नीतियों को क्रियानुरूप करने में अत्यन्त ही चतुराई का प्रदर्शन करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के रंगो के वस्त्रों को धारण करेंगे जिससे आपकी वेशभूषा में विभिन्नता का आभास होगा। शास्त्रों के प्रति आपके मन में अपूर्व श्रद्धा रहेगी तथा अपने प्रयत्न तथा परिश्रम से शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके अपनी बुद्धिमता का परिचय देंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीडित रहेंगे।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथ अधिक लम्बे होंगे तथा शारीरिक सौन्दर्य तथा शरीर के अन्य अंग यथा कान, आंख, दान्त तथा मुख मंडल की आभा भी दर्शनीय रहेगी। स्त्रीवर्ग के प्रति आपके मन में विशिष्टाकर्षण तथा अनुराग रहेगा। आप एक महान एवं प्रसिद्ध विद्वान होंगे तथा विभिन्न प्रकार की धार्मिक संस्थाओं के आप संचालक या अध्यक्ष पद पर आसीन रहेंगे। आप हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने संभाषण में प्रयोग करेंगे फलतः आपसे सभी लोग प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे। सत्य का पालन करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे आप एक धैर्य शाली पुरुष होंगे तथा अपने समस्त दैनिक कार्यकलापों को धैर्य पूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। समस्त प्राणियों तथा जीवों के प्रति आपके मन में दया का सद्भाव विद्यमान

रहेगा साथ ही समाज के अन्य जनों की भलाई के कार्यों में भी आपकी अभिरूचि रहेगी तथा पूर्ण तन, मन, धन से आप इन्हे अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आप में क्षमाशीलता का गुण भी होगा तथा सौभाग्य से आप हमेशा युक्त रहेंगे। आप की पुत्र संतति की अपेक्षा कन्या सन्ततियों की संख्या अधिक रहेंगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णो।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप आलस्य तथा लज्जायुक्त दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे आप अपने जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे। आपके शरीर की कोमलता आकर्षक एवं दर्शनीय होगी तथा सत्य का पालन करने में आप हमेशा रत रहेंगे। नाना प्रकार की कलाओं का आपको ज्ञान रहेगा तथा इनमें आप दक्षता भी प्राप्त करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का भी ज्ञानार्जन करके उनमें विद्वता प्राप्त करेंगे। आप धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा धर्म का भी नियमपूर्वक अनुपालन करेंगे। आप अपने जीवन काल में किसी मित्र संबंधी या अन्य के मकान एवं धन का भी उपयोग करेंगे। घर से बाहर विदेश में निवास करने के लिए भी आप स्वाभाविक रूप से प्रयत्नशील रहेंगे तथा अपने इस उद्धेश्य में सफल भी होंगे।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप स्त्रियों को अपनी विशिष्ट हास्य विलासमय क्रियाओं से अपनी ओर आकर्षित करने तथा उन्हे प्रसन्न करने की क्रिया में पूर्ण रूप से निपुण रहेंगे। आपकी प्रवृति हमेशा अच्छे कार्यों की ओर ही प्रवृत रहेगी तथा आपका सामाजिक व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी संततियां भी अधिक मात्रा में उत्पन्न होंगी तथा आपके समस्त महत्वपूर्ण कार्य सौभाग्य बल से सम्पन्न होंगे।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि हमेशा छल से दूर निर्मलता को प्राप्त रहेगी तथा लेखन कार्य में आपकी विशिष्ट रूचि होने के कारण कविता की रचना करने में आप सफल रहेंगे। आपका स्वभाव अत्यन्त ही शान्त होगा। नेत्ररोगों से आप कभी कभी दुःख की अनुभूति को प्राप्त करेंगे तथा समाज में आप सदाचारी समझे जाऐंगे। आप गुरूजनों के सच्चे भक्त तथा उनके हित

कार्यों को सम्पन्न करने वाले होंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासिता के भाव से भी युक्त रहेंगे तथा समस्त विलासिता के पदार्थो का उपभोग करने में सफल रहेंगे। विद्वान एवं अच्छे लोगों को आप हमेशा आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा ये लोग भी आप से पूर्ण रूप से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। दानी प्रवृति का आप अपने जीवन में समय समय पर प्रदर्शन करते रहेंगे। वैदिक धर्म के प्रति आपके मन में गहन निष्ठा होगी तथा नियमपूर्वक आप इसका अनुपालन करने में तत्पर रहेंगे। समाज के सभी लोगों के प्रति आपका सम्माननीय एवं मधुर व्यवहार रहेगा। आप किसी भी वर्ग में भेद नहीं करेंगे। अतः समाज के सभी वर्गो में पूर्णरूप से लोकप्रियता को प्राप्त करेंगे। अभिनय तथा संगीत के प्रति आपका अनन्य प्रेम रहेगा तथा आजीवन इन संस्थाओं से आपका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क रहेगा। आप का अधिकांश समय विदेश यात्रा में भी व्यतीत होगा।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप समस्त सुखऐश्वर्य तथा वैभव का आनन्द पूर्वक उपभोग करेंगे। कामाग्नि की आप में अधिकता रहेगी अतः समय समय पर इसे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। आपकी वाणी उत्तम होगी तथा कई प्रकार की विद्याओं का आपको ज्ञान रहेगा।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाले होंगे। आप के मन में करूणा की न्यूनता रहेगी। आप एक साहसी पुरूष होगे तथा अपने समस्त कार्य को साहसपूर्वक ही सम्पन्न करेंगे तथा साहसिक कार्यों में आपकी विशेष रूचि रहेगी। लेकिन आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाऐंगे। साथ ही शारीरिक बल का भी आप में अभाव नहीं रहेगा।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते है। आपकी मुखाकृति भी देखने में सुन्दर होगी तथा कभी कभी आप कठोर शब्दों का उपयोग अपने भाषण में करेंगे जिससे अन्य लोग आपसे असन्तुषढ रहंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुरवाणी का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वछन्दता प्रिय प्रकृति के व्यक्ति होगे तथा अपनी इच्छानुसार किसी भी कार्य को सम्पन्न करना पसन्द करेंगे। बाहरी हस्तक्षेप आपको पसन्द नहीं होगा। धन को एकत्रित करने के प्रति भी आपकी रूचि रहेगी तथा अच्छी बातों एवं सद्गुणों को भी ग्रहण करेंगे। अपने क्षेत्र में आप पूर्ण प्रशिक्षित व्यक्ति होंगे अतः समाज से पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे। विभिन्न प्रकार के धनवैभवादि से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। परन्तु आपको अपनी प्रशंसा स्वयं करने की आदत होगी इससे लोग आपसे अधिक प्रभावित नहीं रहेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे कष्टानुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा तथा जीवन में वे धन धान्य से परिपूर्ण रहेंगे एवं आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे यदा कदा आप उनसे विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगे। साथ ही यात्रा एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको सहयोग एवं निर्देश प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी आज्ञा का आप पालन करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों से इसमें कटुता या तनाव का वातावरण भी होगा परन्तु यह अल्प समय के लिए होगा। इसके साथ ही जीवन में आप सर्वप्रकार से पिता को सहयोग देंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे प्रायः युक्त रहेंगे एवं यथाशक्ति जीवन में आपको अपना सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे। साथ ही यदा कदा आप उनसे विशेष रूप से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपका साथ देंगे तथा अपनी ओर से कोई भी कष्ट नहीं होने देंगे।

आप भी उनको हार्दिक सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सहायता करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह तनाव अस्थाई रहेगा एवं शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। जीवन में आप सभी विषम परिस्थितियों में सर्वदा उनकी अपनी ओर से वांछित सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक हैं। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10 तथा 15 तारीख, श्रवण नक्षत्र, शुभ योग, कौलवकरण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के विषय में पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता या अन्य कार्यों में बाधाऐं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा बुधवार एवं गणेश चतुर्थी के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल आदि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में न्यूनता होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होंगे तथा अन्यत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।